175 Years of IIT Roorkee

In the 21st century, India holds a strong position in terms of science and technology. India also serves as a knowledge warehouse with the existence of its many institutions catering to science and technology which come with qualified and trained manpower. IITs have played an important role in the development of science and technology based economy and society in India and abroad.

IIT Roorkee, has an illustrious history and a glorious past. The Thomason College, the oldest engineering college in India, owes its birth to the waters of Mother Ganges. As early as the year 1845, Lieutenant Baird Smith of the Bengal Engineers, then Superintendent of the Eastern Jumna Canal, began training young Indians at Saharanpur in Civil Engineering for the grade of Sub-Assistant Executive Engineer and in 1846 twenty candidates were admitted to this class. In 1847, the Roorkee College of civil engineering was established which later was known as the Thomason College of Civil Engineering.

The University of Roorkee celebrated the completion of 150 years of its existence in 1996-1997. The University of Roorkee, now the Indian Institute of Technology had a modest beginning as the Roorkee College of Engineering in the year 1847, and was converted to the first technical University of India in the year 1949. The institution has an inimitable record of nurturing the enormous talent of this country and providing them with the best of the scientific and technical education of the world. The institution has always provided the path and has been torch bearer for the other upcoming institutions and universities to follow.

On the 21st September 2001, the University was declared an "Institute of National Importance", by an Act of Parliament, changing its status from University of Roorkee to Indian Institute of Technology, Roorkee.

The institute offers Bachelor's Degree courses in 13 disciplines, including Engineering and Architecture; 55 Postgraduate Degree courses are offered in Engineering, Applied Science and Architecture and planning. The Institute has facility for doctoral work in all Departments and Research Centers.

IIT Roorkee has three campus at Roorkee (365 acres), Saharanpur (25 acers) and Greater Noida (10 acres). It has 23 Departments, 7 Academic Centers and 1 Mehta Family School of Data Science and Artificial Intelligence with 526 faculty.

The alumni of IIT Roorkee has always taken a leading role in setting up the technological and social ventures in India and abroad and have played an important role in the development of India. Ten alumni have won the Padma awards and 25 alumni have won the Shanti Swarup Bhatnagar Prize for Science and Technology. The institute has produced 7 chairmen of the Indian Railway Board, chairman of the Telecom Regulatory Authority of India, more than a 100 secretary-level officers in the Government of India, 2 presidents of the Confederation of Indian Industry, Governors of State of India, Chairman of University Grants Commission (India).

IIT Roorkee was ranked 387th in the QS World University Rankings of 2021, 90th in Asia in 2020, and 47th among BRICS nations in 2019. In India, IIT Roorkee has been ranked fifth in the Atal Ranking of Institutions on Innovation Achievements (ARIIA) by the Ministry of Education, 2021. IIT Roorkee ranked #1 in Architecture, #6 in Engineering and #7 overall in national Institute Ranking Framework (NIRF), 2021. The Department of Management Studies was ranked 12th among management schools in India as per NIRF 2020 whereas it was ranked 1st in the category of Research and Professional Practices. The institute has also got ISO 9001:2008 certification for the academic services

Every year, students from more than 50 countries join IIT Roorkee for full-time or short-term training courses. In 1955 the Department of Water Resources Development and Management (WRDM) was established as an Asian African Centre to honor India's commitment at the Asian African Conference held in Bandung. WRDM and the Department of Hydrology run special post graduate programs for students of the Afro Asian region. These departments have so far trained over 2469 service engineers and agricultural scientists from 48 countries including India. The institute maintains strong international presence though MoUs, exchange programs, and funding propositions.

Department of Posts is delighted to issue Commemorative Postage Stamp on 175 years of IIT Roorkee and celebrates its contribution to the development of science and technology in India and abroad.

Credits:

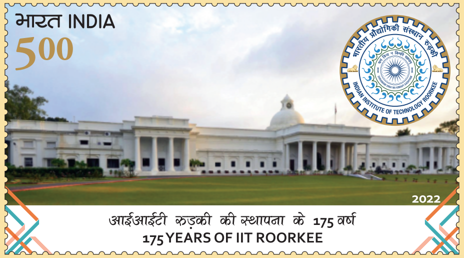
Stamp/FDC/Brochure/	:	Mrs. Nenu Gupta
Cancellation Cachet	:	
Text	:	Referenced from the contents provided by the proponent.

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

आईआईटी रुड़की की स्थापना के 175 वर्ष
175 YEARS OF IIT ROORKEE

1847-2022



विवरणिका
BROCHURE

आईआईटी रुड़की की स्थापना के 175 वर्ष

21वीं सदी में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत अनेक संस्थानों एवं इनके सुयोग्य एवं प्रशिक्षित कार्यबल की बदौलत भारत में ज्ञान का अपार भंडार मौजूद है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों ने भारत एवं विश्व में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित अर्थव्यवस्था एवं समाज का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आईआईटी रुड़की का शानदार इतिहास एवं गौरवशाली अतीत रहा है। मां गंगा की बदौलत भारत के प्राचीनतम इंजीनियरिंग कॉलेज, थॉमसन कॉलेज की स्थापना हुई। शुरुआत में 1845 में बंगाल इंजीनियर्स के तत्कालीन अधीक्षक, ईस्टर्न जमुना केनाल, लेफ्टिनेंट बायर्ड स्मिथ ने सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उप–सहायक कार्यपालक अभियंता ग्रेड के लिए सहारनपुर में युवा भारतीयों को प्रशिक्षित करना प्रारंभ किया। आगे चलकर 1846 में उनकी कक्षा में 20 छात्रों को शामिल किया गया। तत्पश्चात् 1847 में रुड़की कॉलेज ऑफ सिविल इंजीनियरिंग की स्थापना की गई, जो बाद में थॉमसन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के नाम से जाना गया।

रुड़की विश्वविद्यालय ने 1996–97 में अपनी स्थापना के 150 वर्ष पूरे किए। रुड़की विश्वविद्यालय, जिसे अब भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के नाम से जाना जाता है, की शुरुआत 1847 में एक छोटे से रुड़की कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के रूप में हुई। वर्ष 1949 में इसे भारत का प्रथम तकनीकी विश्वविद्यालय घोषित किया गया। इस संस्था को देश के अनेक प्रतिभावान छात्रों को विश्व की सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा प्रदान कर उनकी अद्भुत प्रतिभा को निखारने का अनूठा श्रेय प्राप्त है। इस संस्था ने सदैव ही उभरती संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों का मार्ग प्रशस्त करते हुए उन्हें आगे की राह दिखाई है।

21 सितंबर, 2001 को संसद के एक अधिनियम द्वारा रुड़की विश्वविद्यालय को ''राष्ट्रीय महत्व का संस्थान'' घोषित किया गया और इसे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की का दर्जा प्रदान किया गया।

इस संस्थान में छात्रों के लिए इंजीनियरिंग और वास्तुकला सहित 13 विषयों में स्नातक पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। साथ ही यहां इंजीनियरिंग, अनुप्रयुक्त विज्ञान (एप्लाइड सांइस) और वास्तुकला एवं योजना विषय में 55 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं।

आईआईटी रुड़की के 3 परिसर हैं, जो रुड़की (365 एकड़), सहारनपुर (25 एकड़) और ग्रेटर नोएडा (10 एकड़) में स्थित हैं। इसमें 23 विभाग, 7 अकादमिक केंद्र और 1 'मेहता फेमिली स्कूल ऑफ डाटा साइंस एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' है तथा यहां के शिक्षकगणों की संख्या 526 है।

आईआईटी रुड़की के पूर्व छात्रों ने भारत के साथ–साथ विदेशों में प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक उपक्रमों की शुरुआत करने में अग्रणी भूमिका निभाई है और भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। यहां के 10 पूर्व छात्रों को पद्म पुरस्कार तथा 25 पूर्व छात्रों को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र का शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस संस्थान को भारतीय रेलवे बोर्ड को 7 अध्यक्ष, भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण को अध्यक्ष तथा भारत सरकार को 100 से अधिक सचिव स्तर के अधिकारीगण के साथ–साथ भारतीय उद्योग संघ को 2 अध्यक्ष, भारत के अनेक राज्यों के राज्यपाल तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (भारत) को अध्यक्ष देने का गौरव प्राप्त है।

आईआईटी रुड़की को 2021 की क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में 387वां स्थान, 2020 में एशिया में 90वां स्थान और 2019 में ब्रिक्स देशों में 47वां स्थान प्राप्त हुआ था। आईआईटी रुड़की को शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2021 में अटल रैंकिंग ऑफ इंस्टिट्यूशन्स ऑन इनोवेशन एचीवमेंट्स (एआरआईआईए) में भारत में 5वां स्थान प्राप्त हुआ। नेशनल इंस्टीट्यूट रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ), 2021 में आईआईटी रुड़की को वास्तुकला में प्रथम, इंजीनियरिंग में छठा और समग्र रूप से 7वां स्थान प्राप्त हुआ। एनआईआरएफ 2020 के अनुसार, इसके प्रबंधन अध्ययन विभाग को प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थानों में 12वां स्थान प्राप्त हुआ, जबकि अनुसंधान एवं प्रोफेशनल कार्यपद्धतियों की श्रेणी में इसे प्रथम स्थान मिला। अकादमिक सेवाओं के संदर्भ में इस संस्थान को आईएसओ 9001:20 08 प्रमाणन प्राप्त है।

प्रतिवर्ष 50 से भी अधिक देशों के छात्र आईआईटी रुड़की में पूर्णकालिक अथवा अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में दाखिला लेते हैं। बानडुंग में हुए एशियाई–अफ्रीकी सम्मेलन में व्यक्त की गई भारत की प्रतिबद्धता के अनुरूप, 1955 में इस संस्थान में एशियाई–अफ्रीकी केंद्र के रूप में जल संसाधन विकास एवं प्रबंधन (डब्ल्यूआरडीएम) विभाग की स्थापना की गई। डब्ल्यूआरडीएम और जलविज्ञान विभाग, अफ्रीकी–एशियाई क्षेत्र के छात्रों के लिए विशेष स्नातकोत्तर कार्यक्रम चलाता है। इन दोनों विभागों ने अब तक भारत सहित 48 देशों के 2469 से अधिक सर्विस इंजीनियरों और कृषि वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित किया है। समझौता ज्ञापनों, एक्सचेंज कार्यक्रमों और फंडिंग प्रस्तावों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस संस्थान की सशक्त मौजूदगी है।

डाक विभाग, देश–विदेश में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास में आईआईटी रुड़की के योगदान को रेखांकित करते हुए इसकी स्थापना के 175 वर्ष पूरे होने के अवसर पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर।

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 303200
Stamps Printed	: 303200
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00